

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७३

नित नवल : नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

बारह कृतिक समग्र आलोचनात्मक अध्ययन

LXXIII

विदेह • आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७३

नित नवल

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क साहित्य पर
आलोचनाक पुनर्पाठ

बारह अध्ययन • विधागत विवेक • सामाजिक मूल्य

सम्पादकीय समीक्षा

विदेह • २०२६

प्रकाशकीय टिप्पणी

ई खण्ड गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल : नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क बारह कृतिक समग्र आलोचनात्मक अध्ययन' (२०२६) पर केन्द्रित स्वतंत्र सम्पादकीय समीक्षा अछि। अध्ययनाधीन ग्रन्थक लेखक गजेन्द्र ठाकुर छथि; ओकर विषय नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क रचनाधर्मिता अछि। एहि दुहरी स्थितिक भेद राखब सम्पूर्ण समीक्षाक पद्धतिगत आवश्यकता अछि। एतय हम नन्दक मूल बारह पोथीक स्वतंत्र प्रत्यक्ष परीक्षण प्रस्तुत करबाक दावा नहि करैत छी; उपलब्ध पाठ गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक ग्रन्थ अछि, जाहिमे मूल कृतिक कथ्य, अनुक्रम, उद्धरण, संस्करण-संकेत आ मूल्याङ्कन संकलित अछि। तँ मूल रचनाक प्रसंग-सूचना आ आलोचकक विवेचनक बीच स्पष्ट भेद बनाएल गेल अछि।

सम्पादकीय काजक अर्थ एहि ठाम मूल अध्ययनक पुनरुक्ति नहि अछि। प्रश्न ई अछि जे समीक्षा कोना अपन साहित्येतिहास रचैत अछि; केहन प्रमाणसँ तर्क टिकबैत अछि; सामाजिक प्रतिबद्धता आ कलात्मक स्वायत्तताक बीच कोन सन्तुलन बनबैत अछि; तथा बारह भिन्न विधाक एकहि लेखककें पढ़बाक लेल एके कसौटी कतय पर्याप्त आ कतय अपर्याप्त सिद्ध होइत अछि। उपलब्धि आ सीमा दुनूकें पाठक भीतरक ठोस संरचना सँ जोड़ि परखल गेल अछि।

मूल ग्रन्थ ६ × ९ इञ्चक विन्यासमे लगभग दू सय अड़तालीस पृष्ठक अछि। ओकर चारि खण्ड—लोकजीवनक कथा, सामाजिक उपन्यास, शब्दचित्र एवं मिथकीय पुनर्विचार, आ गीत तथा बालकल्पना—बारह अध्ययनकें विधागत तथा विषयगत क्रम दैत अछि। एहि सम्पादकीय खण्डमे ओहि क्रमकें सुरक्षित रखि प्रत्येक अध्ययनक प्रमुख तर्क, पठन-प्रविधि, साक्ष्य-संवेदनशीलता आ अन्तरविरोधक परीक्षण कएल गेल अछि। पुस्तकक मुद्रित पृष्ठ-संकेत मूल ग्रन्थक अनुक्रमणिका अनुसार देल गेल अछि; ई संकेत नव सम्पादकीय पाण्डुलिपिक पृष्ठ-संख्या नहि अछि।

अनुक्रम

१. प्रवेश : आलोचना, समाज आ विधाक प्रश्न.....	४
२. 'गाम-घर' : पन्द्रह रचनाक पाठ आ विधागत सीमा.....	६
३. 'आडम्बर' : सार्वजनिक नैतिकताक व्यंग्य-वाचन.....	८
४. 'गुदडीक लाल' : वर्ग, देह, शिक्षा आ न्याय.....	१०
५. 'अनठिया कुकुर' : समाजसुधारक उपन्यासक संरचना.....	१२
६. 'सुजाता' : निजी शोकसँ संस्थागत प्रतिरोध.....	१४
७. 'सुकन्या' : वैधव्य, सहमति आ स्वनिर्णय.....	१६
८. 'परिवार' : स्मृति, वंशावली आ पुनर्संयोजन.....	१८
९. 'दिल्लीक पार्क' : प्रवासन आ सार्वजनिक संवाद.....	२०
१०. 'याचक के नज़ि' : दान, अधिकार आ निर्भरता.....	२२
११. 'महारानी कैकेयी' : प्रतिपाठक साक्ष्यशास्त्र.....	२४
१२. 'काव्य सरिता' : गीतक पाठ आ श्रव्य परम्परा.....	२६
१३. 'स्वर्ण-कमल' : बालकथा, न्याय आ चमत्कार.....	२८
१४. समेकित विवेचन : बारह अध्ययनक आन्तरिक संवाद.....	३०
१५. पाँच उल्लेखनीय आलोचनात्मक उपलब्धि.....	३३
१६. उपसंहार आ पाठाधार.....	३५

प्रवेश : आलोचनाक विषय के अछि?

‘नित नवल’क पहिल विशेषता ओकर विषयक विस्तार अछि। नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’कें एक प्रकारक कथाकार कहि सीमित करबाक बदला ग्रन्थ कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, मिथकीय तर्क, गीत आ बाल-आख्यानक क्षेत्रमे लऽ जाइत अछि। एहन विस्तार सहजहि प्रशंसात्मक सूची बनि सकैत छल; मुदा गजेन्द्र ठाकुरक आलोचना बारम्बार एकटा असुविधाजनक प्रश्न उठबैत अछि— सामाजिक दृष्टि जखन प्रत्यक्ष नैतिक शिक्षा बनि जाइत अछि, तखन साहित्यिक रचनाक स्वतंत्र अनुभव कोन अनुपातमे सुरक्षित रहैत अछि? एहि प्रश्नक निरन्तरता ग्रन्थकें मात्र कृति-परिचयसँ आगाँ लऽ जाइत अछि।

दोसर महत्त्वपूर्ण आधार विधागत अनुशासन अछि। ‘गाम-घर’क अन्तिम किछु दृष्टान्त बालपाठकीय उपयोगितासँ जुड़ि सकैत अछि, मुदा पूरा संग्रह बाल-साहित्य नहि; ‘याचक के नजि’ सामाजिक शब्दचित्र अछि, ओकरा बाल-उपन्यास नहि कहबाक चाही; ‘स्वर्ण-कमल’क पाठकीय परिस्थिति स्वतंत्र अछि। एहि भेदपर आलोचक बारम्बार जोर दैत छथि। यद्यपि एहि आवृत्तिक कारण किछु अध्यायमे ऐतिहासिक बाल-साहित्य सम्बन्धी अनुच्छेद अनुपातसँ बेसी विस्तार पवैत अछि, तथापि मूल प्रतिज्ञा मूल्यवान अछि : समान नैतिक सरोकारक अर्थ समान विधा नहि।

तेसर बात स्रोत-सावधानी अछि। ग्रन्थ पृष्ठाङ्क, प्रारम्भिक निवेदन, मुद्रित अनुक्रम आ उपलब्ध संस्करण-विवरणक सहारा लैत अछि; किछु ठाम लेखकक निवेदनक तिथि आ पुस्तकक प्रकाशन-वर्ष अलग राखैत अछि, कतहु ऐतिहासिक उद्धरण आ कल्पनात्मक पुनर्पाठक भेद स्पष्ट करैत अछि। ई विवेक साहित्येतिहासक भरोसा बढ़बैत अछि। किन्तु प्रत्येक अध्यायमे सन्दर्भ-विश्लेषणक प्रमाण समान घनत्वक नहि अछि। ग्रन्थक आकार जतेक पैघ अछि, ओकर चयन-नीति तथा आलोचनात्मक तर्कक क्रम सेहो ओतेक पारदर्शी होयबाक अपेक्षा बनैत अछि।

चारिम बात सामाजिक सुधारक भाषिकता अछि। सामाजिक नायक, न्यायालय, विद्यालय, ग्रामसभा, दहेज-विवाद, विवाहक पुनर्परिभाषा आ प्रशासनिक दबाव विविध रचनामे आबैत अछि। आलोचक नन्दक मानवीय

आग्रहक सम्मान करैत छथि, मुदा समाधानक अति-सुगमता, आदर्श पात्रक अतिशय निर्णायक भूमिका आ स्त्रीक आत्मस्वरक अल्पता पर प्रश्न सेहो उठबैत छथि। ई आलोचनात्मक दूरी प्रशंसासँ अलग अछि। मुदा एक नवीन प्रश्न एतय उठैत अछि : जँ बारह कृतिमे एकहि शैलीक कमजोरी पहिचानल गेल अछि, तँ प्रत्येक ठाम ओही निष्कर्ष दोहरायब पर्याप्त नहि; ओहि कमजोरीक अलग-अलग कलात्मक कारण बतब आरो आवश्यक अछि।

साहित्य-समाजशास्त्र आ रूपविवेचनक विचौलिया बनब एहि ग्रन्थक मूल चुनौती अछि। केवल जाति, वर्ग आ लिंगक विवेचन कथानकक गति नहि पकड़ि सकैत; केवल कथा-कौशल सामाजिक सत्ता-सम्बन्धक इतिहास नहि बुझा सकैत। गजेन्द्र ठाकुर सभसँ सफल तखन छथि जखन पात्रक विशिष्ट कर्म, रचनाक अनुक्रम अथवा दृष्टिबिन्दुक बदलाव सँ मूल्यनिर्णय निकालैत छथि। जखन व्याख्या तैयार नैतिक निष्कर्ष बनि जाइत अछि, तखन आलोचना स्वयं ओहि प्रवचनात्मकताक समीप पहुँचि जाइत अछि जकर आलोचना ओ मूल कृतिमे करैत छथि। एहि आत्मसमानताक पहचान एहि पुनर्पाठक एक जरूरी प्रयोजन अछि।

१. 'गाम-घर' : लोकजीवनक कथामे विधाक आवाज

मूल आलोचना : पृ. १-२६

'गाम-घर' पर लिखल अध्याय पन्द्रह रचनाक क्रम, मुद्रित पृष्ठ-संकेत, भाषा आ सामाजिक तत्त्वक विस्तृत पाठ-विन्यास प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भक प्रश्न ई नहि जे गाम सुन्दर अछि, कि कुरूप; प्रश्न ई जे ग्रामसमाज कोना खर्च, मान-सम्मान, धार्मिक कर्म, स्त्रीक भागीदारी आ सार्वजनिक अधिकारक नियम बनबैत अछि। आलोचक 'बाबाक भोज'क श्राद्ध-व्यय, 'भोरक सपना'क जातीय समता, 'फेकनी माय'क पंचायत-सम्भावना आ 'लूट-तंत्र'क राजनीतिक विडम्बनाक सहारे सामाजिक व्यवहारकें आर्थिक आ नैतिक दुनू अर्थमे पढ़ैत छथि। ई अध्याय 'गाम'क भावुक प्रशंसा नहि, ओकर संस्थागत आलोचना बनबाक दिशा लेइत अछि।

विशेष उल्लेखनीय अछि जे अध्यायक भीतरे सामाजिक कथासँ लोकदृष्टान्त धरि क्रम देखाओल गेल अछि। 'उनटा चालि', 'घोड़ीक अण्डा' आ 'शेरक आतंक'कें बालोपयोगी तत्ववला रचना कहल गेल अछि, मुदा समस्त पुस्तककें बालकथा घोषित नहि कएल गेल। एतय विधा-निर्णय पाठकक सम्भावित उपयोगसँ अलग राखल गेल अछि। साहित्यिक आलोचनानामे ई सामान्य लागयवला अनुशासन वास्तवमे आवश्यक अछि, कारण नैतिक उपदेश वा पशुपात्रक उपस्थितिमात्र सँ बाल-साहित्यक इतिहास नहि लिखल जा सकैत।

कथावाचकक व्यवहार पर अध्याय अपन पैघ आलोचनात्मक बल लगबैत अछि। कथा आरम्भमे सामाजिक समस्या कहि दैत अछि, तखन पात्रक स्वतंत्र क्रिया नैतिक दृष्टान्त बनबाक जोखिम उठबैत अछि—एहन आपत्ति 'गाम-घर'क भीतर अलग-अलग रचनापर लागू भऽ सकैत अछि। मुदा रचनाभेद खोलबाक लेल आलोचनाकें ईहो पूछबाक चाही जे 'घोड़ीक अण्डा'क विनोदी असम्भवता आ 'शंकरक खोज'क पौराणिक आह्वानमे उपदेशक यन्त्रणा एके प्रकारक अछि, कि नहि। ई तुलना संकेतित अछि, पूर्णतः विस्तृत नहि।

आलोचनाक प्रमाणविधानमे मुद्रित प्रारम्भिक पृष्ठ आ लेखकक 'दू शब्द'कें साहित्यिक पाठक संग पढ़ल गेल अछि। खास कऽ निवेदनक तिथि सँ पुस्तकक

निश्चित प्रकाशन-वर्ष अनुमानित नहि करबाक सावधानी अनावश्यक संकोच नहि, पाठेतिहासक ईमानदारी अछि। एहि कारण ई अध्याय शोध-पाठक लेल उपयोगी बनैत अछि। यद्यपि एकहि खण्डमे पन्द्रह रचनाक संक्षिप्त परीक्षण आ बाल-साहित्यक पुरस्कार-इतिहासक विस्तार दुनू जोड़ल गेलासँ कथाशिल्पक सूक्ष्म विवेचन लेल अपेक्षित ठाम कवनो घटैत अछि।

एकर स्थायी योगदान ग्राम्य लोकजीवन आ बालोपयोगी दृष्टान्तक बीचक संक्रमणकें पहिचानब अछि। तथापि आलोचना 'गाम'क सामाजिक बहुलताकें आरो ठोस बोली-भेद, वर्गीय दैनिकता आ रचना-समापनक भिन्न प्रकारसँ जोड़ितय तँ एकर कलात्मक समीक्षा अधिक गहिर होइत। एखन ई अध्याय मजबूत साहित्यिक मानचित्र अछि—प्रत्येक स्थल पर समान रूपसँ सघन सूक्ष्म-पाठ नहि।

२. 'आडम्बर' : नीति-वाक्यसँ कथात्मक विडम्बना धरि

मूल आलोचना : पृ. २७-५०

'आडम्बर'क बीस कथाकें आलोचक सार्वजनिक दावा आ व्यवहारक विरोधक एक व्यापक क्षेत्रमे रखैत छथि। श्राद्ध, जाति, आरक्षण, रेल-यात्रा, चुनाव, बेगार, धन-संचय आ कविक असुरक्षा जेकाँ अलग विषय शीर्षकक एकहि प्रश्नसँ जुड़ैत अछि—जे समाज अपनाकें पुण्यशील आ न्यायप्रिय कहैत अछि, ओ तकरा दैनिक व्यवहारमे कतेक निभबैत अछि? शीर्षक-कथाक अर्थ सम्पूर्ण संग्रहक नैतिक सूत्र बनबाक एहि पढनाइमे प्रस्तावित अछि।

बीस कथाक अलग-अलग विश्लेषणक कारण अध्याय पठनीय सन्दर्भ-सामग्री बनैत अछि। 'लाश'क सम्पत्ति-लालसा, 'बेगार'मे कानून आ जीवित व्यवहारक अन्तर, 'कविक जिनगी'मे साहित्यकारक सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रश्न, आ 'जानि कऽ बेसाहब'मे धनोपार्जन तथा परोपकारक द्वन्द्वक विशिष्टता बचल रहैत अछि। एहि सभ उदाहरणसँ आलोचना केवल 'समाजसुधार' सन सामान्य शब्द पर निर्भर नहि रहैत। ओकर सुदृढ अंश ओहि ठाम अछि जतय कथाक दृश्य आ रचनात्मक व्यंग्य बोधक अलग मार्ग बनबैत अछि।

एहि विवेचनक एक मार्मिक तनाव ई अछि जे स्वयं नन्दक कथा सार्वजनिक नैतिकता पर पैघ व्याख्यान बनबाक जोखिम उठबैत अछि। आलोचक स्पष्ट करैत छथि जे प्रत्यक्ष टिप्पणी पात्रक अस्पष्टता घटबैत अछि; कथाकार पाठककें निष्कर्ष तक पहुँचेबामे एतेक सक्रिय छथि जे कथा पूछबाक बदला समझेबाक माध्यम बनि जाइत अछि। मुदा एतय व्यंग्यक एक विशेष अधिकार सेहो अछि : व्यंग्यकारक वाणी अनिवार्य रूपसँ संकेतमे लुका रहय, ई नियम नहि। प्रश्न वक्तव्यक उपस्थितिक नहि, ओकर रचनात्मक समय आ प्रभावक अछि। एहि कसौटी पर कथा-दर-कथा टकराव आरो विस्तार पाबि सकैत छल।

अध्याय बाल-साहित्यसँ अपन सम्बन्ध बहुत सावधानीसँ तय करैत अछि। सामाजिक कथा-संग्रहकें बालकथा नहि मानि चयनित प्रसंगक किशोर पठन-संभावना स्वीकारब सन्तुलित निर्णय अछि। मुदा एहि विषयक बारम्बार वापसी आलोचनाक मूल प्रश्न—बीस कथाक व्यंग्यक शिल्प—सँ ध्यान हटबैत सेहो अछि। जँ बालसाहित्यक समकालीन अभिलेखक तुलना थोड़ेक संक्षिप्त होइत

तँ संवाद, लय, आख्यानक समाप्ति आ शाब्दिक विडम्बना पर अधिक गहिर दृष्टि देल जा सकैत छल।

‘गाम-घर’ आ ‘आडम्बर’ एकसाथ पढ़िते ई बुझाईत अछि जे आलोचक नन्दक सामाजिक दृश्यकेँ मात्र पुनरुक्ति नहि मानैत छथि। पहिल कृतिमे गाम सामाजिक-स्मृतिक आधार अछि, एतय सार्वजनिक ‘सदाचार’क मुखौटा मुखर विषय अछि। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि। ताहू पर, दुनू अध्यायक निष्कर्षमे उपदेशात्मकता आ आदर्शवादक जे पुनरागमन अछि, ओकर रूपान्तर कोना भेल —ई इतिहास बोधक अलग उप-अध्ययन बनि सकैत छल।

३. 'गुदड़ीक लाल' : पीड़ित व्यक्तिक जीवन आ न्यायिक समापन

मूल आलोचना : पृ. ५१-७५

'गुदड़ीक लाल'क विवेचन पुस्तकक सघनतम अध्ययनसभमे अछि। बाइस परिच्छेदक अलग परीक्षणसँ सामन्ती प्रभुत्व, खेतिहर श्रम, स्त्रीक दैहिक असुरक्षा, शिक्षाक अवसर आ अदालतक अन्तिम निर्णयक बीच विस्तारित सम्बन्ध बनाओल गेल अछि। मटरू, सुगिया, जालिम सिंह आ सुरेश्वरक स्थिति सामान्य प्रतीक नहि, परस्पर असमान सत्ता-सम्बन्धक वाहक बनैत अछि। आलोचक 'गुदड़ी'क भीतर 'लाल'क पहिचानक प्रश्नकें श्रम-समाजक मूल्यबोधसँ जोड़ि देखैत छथि।

एहि अध्यायक सर्वाधिक मूल्यवान हस्तक्षेप सुगियाक जीवनमे सहमतिक प्रश्न उठेबाक अछि। सत्ता, आर्थिक निर्भरता आ सामाजिक कलंकक बीच होइत निर्णयकें पूर्ण स्वतंत्र सहमति मानि लेब नैतिक भूल होएत—ई आलोचनात्मक प्रश्न पात्रक करुणामय चित्रणसँ आगाँ जाइत अछि। स्त्रीक गरिमा केवल मातृत्व, विवाह वा प्रतिष्ठित परिवारमे अन्तिम स्वीकृतिसँ सिद्ध नहि होइत। आलोचना एहि बिन्दुपर मूल उपन्यासक सुधारवादी लक्ष्य आ आधुनिक स्त्री-अधिकारक सूक्ष्म कसौटीक बीच एक महत्वपूर्ण दूरी स्थापित करैत अछि।

शिक्षा उपन्यासमे सामाजिक आरोहणक साधन अछि। आलोचना सुरेश्वरक उन्नतिकें दया-दक्षिणाक परिणाम नहि, अवसरक प्रश्न बनबैत अछि। एहि दृष्टिक अर्थ ई अछि जे प्रतिभाक पहिचानसँ अधिक आवश्यक ओ बाधाकें देखब अछि जाहि कारण प्रतिभा दबि जाइत अछि। मुदा एक प्रतिभाशाली व्यक्तिक सफलतासँ समूच ग्रामीण श्रमिक वर्गक मुक्ति सिद्ध नहि होइत। आलोचक अन्तिम न्यायिक पुनर्स्थापनाक एहि सीमा पर ध्यान देलनि; एकर कारण निजी समाधान आ संस्थागत परिवर्तन अलग विचार-विषय रहैत अछि।

बाइस परिच्छेदक क्रमागत परीक्षण अध्ययनकें विश्वसनीय आधार प्रदान करैत अछि, मुदा वर्णनात्मक विस्तारक जोखिम सेहो पैदा करैत अछि। एकर बहुत अंश कथानकक गतिपथ स्पष्ट करबामे लगैत अछि; प्रत्येक परिच्छेदक अन्तमे नव रूपवैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त नहि होइत। मूल आलोचना एकाधिक ठाम पात्रक मनोविज्ञान, विधिक परिणति आ शिक्षा-न्यायक इतिहास

अलगावसँ देखैत अछि; यदि एहि तीनूकें कथावाचकक दृष्टिबिन्दु, समय-संकोचन आ संवादक लयक संग अधिक प्रत्यक्ष जोड़ल जाइत तँ शिल्पगत तर्क सुदृढ़ होइत।

अन्य मैथिली-हिन्दी सामाजिक उपन्यासक तुलनात्मक सन्दर्भ एहि अध्यायमे उपस्थित अछि। 'कन्यादान', 'पारो' आ 'गोदान'क नाम चर्चा लेल उपयोगी मार्ग खोलैत अछि, मुदा केवल प्रश्नक समानता कृतिसभक रूपगत समानता सिद्ध नहि करैत। तुलनाक प्रामाणिक बल पात्र-संरचना, सामाजिक व्यवस्थाक विशेष रूप आ अन्तिम समाधानक प्रकृति मिलबासँ बढ़ैत। एतय आलोचना सावधान अछि, तथापि तुलनात्मक अंशमे एहि पद्धतिक स्पष्ट प्रदर्शन आरो होयबाक चाही।

एहि सभ संग 'गुदड़ीक लाल'क विवेचन एहि ग्रन्थक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि, कारण ई दमन आ परित्राणक सीधा नीतिचित्र बनबाकें अस्वीकार करैत अछि। सुगियाक निर्णय, मजदूरक असुरक्षा आ न्यायालयक अधिकारक बीच जे असममित सम्बन्ध अछि, ओहि पर आलोचनात्मक तर्क टिकैत अछि। सामाजिक उपन्यासक सम्मान करैत ओकर सरल सुखान्तसँ असहमति रखबाक ई रूप आलोचनाक स्वायत्तता सिद्ध करैत अछि।

४. 'अनठिया कुरुर' : चरित्रक सदाशयता आ संरचनाक विरोध

मूल आलोचना : पृ. ७६-९३

'अनठिया कुरुर' पर आलोचनामे गाम आ नगरक बीच आवागमन सामाजिक संरचनाक रूपमे उभरैत अछि। प्रेम, मालती, विदुर, गरीब किसान, पुरोहित, कर्मचारी आ न्यायिक संसारक माध्यमसँ उपन्यासक सामाजिक मानचित्र बनाओल गेल अछि। पाठ एगारह मूल खण्डक क्रम राखि धन, कर्ज, भरोसा, स्त्री-पात्रक इच्छा, शिक्षित युवा आ ग्रामीण न्याय-व्यवहारक प्रश्न एकत्रित करैत अछि। एहि विस्तारक बीच कथाक केन्द्र कोन पात्र अछि, ई प्रश्न स्वयं आलोचक पूछैत छथि।

विशेष ई जे ग्रामसुधारक चर्चा भावनात्मक उदारतापर सीमित नहि रहैत। खेतक विवाद, न्यायिक कागज, आर्थिक निर्भरता आ शिक्षाक अवसरक प्रसंग सामान्य नैतिक शिक्षाकें सामाजिक संस्था तक पहुँचेबैत अछि। समाजक सद्भाव आवश्यक अछि, मुदा कानूनी व्यवस्था आ अर्थनीतिक शक्ति-असमानता हटब विनु सद्भाव कतेक प्रभावी रहत—ई प्रश्न आलोचनाक भीतर सक्रिय अछि।

आलोचनाक निर्णायक आपत्ति प्रेमक आदर्शीकृत भूमिका पर अछि। जखन एक नायक अनेक संकट अपन सज्जनतासँ सुलझा दैत अछि, सामाजिक प्रश्न व्यक्ति-विशेषक गुणक प्रमाण बनि सकैत अछि। उपन्यासमे खलपात्रक मानसक अस्पष्टता सेहो तकरा जोड़ैत अछि। मुदा आलोचक यदि प्रेमक निर्णयनक क्रम, ओकर गलत अनुमान आ आन पात्रक असहमतिक विशिष्ट दृश्य अधिक खोलि देखबैत छथि, तँ आदर्शवादक आपत्ति अधिक ठोस रूप पबैत। एखन मूल्यनिर्णय सटीक अछि, पर ओकर नैरेटोलॉजिकल आधार किछु ठाम संक्षिप्त।

शीर्षक 'अनठिया कुरुर'क अर्थ-सम्भावना पर अध्ययन विचार करैत अछि। शीर्षकक लोकवाक्य आ कहानीक व्यापक सामाजिक संश्लिष्टताक सम्बन्ध जाँचब आवश्यक अछि, कारण शीर्षक मात्र विनोदी प्रविष्टि नहि, पाठकक व्याख्याक दिशा होइत अछि। कथा जतेक बहुकेन्द्रीय अछि, ओकर शीर्षक ओतेक एकल संकेत दैत अछि; एहि अन्तरपर आलोचना विस्तृत संवाद खोलि

सकैत छल। एहि समीक्षामे शीर्षक-विमर्श मौजूद अछि, किन्तु मुख्य पाठक बहुअर्थी सम्भावना पूर्ण रूपेँ पुनः परखल नहि गेल।

एहि अध्यायक निर्णय एहि रूपमे सम्भव अछि : ई पुस्तकक व्यापक सामाजिकता आ ओकर कलात्मक अव्यवस्थाक उचित चित्र प्रदान करैत अछि। नैतिक आदर्श जखन कथानकक नियमन बनैत अछि, तखन ओकरा मात्र 'संदेश' नहि बल्कि शिल्पगत प्रविधि बुझबाक चाही। आलोचना ओ दिशा देखबैत अछि; अति-आदर्शवादी नायकक अन्तर्विरोधकैँ प्रकट करबाक लेल अधिक समीप-पाठ ओकर अगिला कदम होइत।

५. 'सुजाता' : स्त्रीक निजी निर्णयसँ नागरिक प्रतिरोध

मूल आलोचना : पृ. ९४-११२

'सुजाता'क तेरह अंशक क्रमिक विवेचन एक स्पष्ट परिवर्तनरेखा निर्मित करैत अछि—पारिवारिक विवाह-बातचीतसँ दाम्पत्य, पंकजक मृत्यु, वैधव्यक सामाजिक निगरानी, रोजगारीक आवश्यकता आ कार्यालयी दबाव धरि। आलोचकक तर्क ई अछि जे सुजाता केवल परिवारक पीड़ित स्त्री नहि; ओ सार्वजनिक संस्थामे निर्णय लए सकनिहार नागरिक सेहो अछि। ई संक्रमण एहि अध्ययनक रचनात्मक केन्द्र अछि।

अध्याय सुजाताक श्वेत वस्त्र, पुनर्विवाहक चर्चासभ, नौकरी आ कार्यालयी असमानता पर अलग-अलग दृष्टि देइत अछि। शोकक दृश्य मात्र मानसिक स्थिति नहि रहि जाइत; ओकरा समाज स्त्रीक आचार-नियम बनाय देइत अछि। जखन कथा घरक परिधिसँ दफ्तर धरि जाइत अछि, तखन पितृसत्तात्मक निगरानीक रूप बदलैत अछि, समाप्त नहि होइत। एहि बदलैत संस्थागत रूपकें एक निरन्तर स्त्री-अनुभवक भीतर पढ़ब आलोचनाक मजबूत उपलब्धि अछि।

कलावती आ सुनीताक प्रसंगक सहारे महिला-सहयोगक सम्भावना खोलल गेल अछि। स्त्रीक संघर्ष एक 'आदर्श नायिका'क व्यक्तिगत साहस मात्र रहि जाय तँ कथा सामाजिक संरचनाक प्रश्न कम करैत अछि। महिला-संघटक सम्बन्ध, आपसी सहयोग आ प्रशासनिक प्रतिरोधक दृश्य एहि जोखिमकें कम करैत अछि। आलोचक एतय नायिका आ सहायक पात्रकें जोड़ैत छथि, जाहिसँ स्त्री-अधिकारक विचार सामूहिक आयाम पबैत अछि।

अध्यायक सीमा ई अछि जे कथा-क्रमक दीर्घ पुनर्निर्माण आ नैतिक निष्कर्षक पुनरावृत्तिक बीच तेरह अंशक कलात्मक लयक सूक्ष्म माप कखनो छिपि जाइत अछि। कोन दृश्य सुजाताक अन्तःकथनक माध्यमसँ बनल अछि आ कोन लेखकक उद्घोषणासँ, एहन भेद लगातार निर्दिष्ट रहित तँ कथावाचकक शक्ति अधिक स्पष्ट होइत। गजेन्द्र ठाकुर एहि आपत्तिक संकेत करैत छथि, मुदा दृश्यगत भाषिक प्रमाण प्रत्येक ठाम समान मात्रामे उपलब्ध नहि करबैत।

स्त्री-अस्मिताक एहि विवेचनकेँ 'सुकन्या'क अध्ययनसँ अलग देखब जरूरी अछि। 'सुजाता'मे वैधव्य सार्वजनिक कार्यस्थलक शक्ति-संतुलनसँ भिड़ैत अछि; 'सुकन्या'मे विधवा-पुनर्विवाह आ सामाजिक स्वीकृतिक प्रश्न आगाँ अबैत अछि। कृति-दू बीचक एहि अन्तरक पहचान साहित्यिक विवेक अछि। समीक्षकक लेखन जतेक एहि भिन्नताकेँ टिकाबैत अछि, ओतेक ओकर अध्याय सजीव बनैत अछि; जखन सामान्य नारी-सुधारक भाषा लौटैत अछि, भिन्नता किछु मंद पड़ैत अछि।

६. 'सुकन्या' : पुनर्विवाहक प्रश्न आ स्वतंत्र इच्छाक भाषा

मूल आलोचना : पृ. ११३-१३२

'सुकन्या'क चर्चा पुनर्विवाहक सहानुभूतिक सरल कर्म मानि नहि चलैत। सुकन्या, रतन, सुनीताक स्मृति, कॉलेज-जीवन, रिकी-निर्मल प्रसंग आ पञ्चायतक दबाव मिलि समाजक विवाह-व्यवस्था बनबैत अछि। आलोचना याद करबैत अछि जे पुनर्विवाहक वैधता आ स्त्रीक निर्णयक स्वातन्त्र्य एक नहि अछि। कोनो व्यवस्था स्त्रीक पक्षमे निर्णय देत, मुदा ओकर इच्छा पूछत नहि, तँ अधिकारक मूल प्रश्न अधूरा रहि जाएत।

रतनक एकान्त आ मृतक सुनीताक स्मृतिक विवेचन विशेष अर्थ दैत अछि। शोक अपन अलग जीवन-काल रखैत अछि, ओ केवल अगिला विवाहक कथा आरम्भ करबाक उपकरण नहि बनबाक चाही। अध्ययन एहि स्मृतिक सक्रियता पर ध्यान दैत अछि। एहिसँ रतन एहन पात्र बनैत अछि जकर सम्बन्धक पुनर्गठन बीतल जीवनकें मेटि कऽ नहि, ओकरा स्वीकारि कऽ होइत अछि।

पाठक बहुसूत्रता एक जटिल चुनौती अछि। कॉलेजमे अपमान, रोग, दहेजक दबाव, कामकाजी मध्यवर्ग, स्वतंत्र चयन—ई सभ विषय एके उपन्यासमे उपस्थित अछि। आलोचकक क्रमिक पुनर्पाठ ई बहुतेक सूत्रकें पहिचानैत अछि, मुदा एहि बहुलतामे कोन प्रसंग कथानकक निर्णायक कडी आ कोन प्रसंग सामाजिक शिक्षा लेल जोड़ल गेल अछि, तकर अनुपात-विश्लेषण आवश्यक अछि। अनेक संघर्ष यदि अन्तिम पुनर्स्थापनाक हितमे बहुत जल्दी हल भऽ जाए, तँ उपन्यासकें जीवनक कठिनता सँ अधिक लेखकक नैतिक चाह नियन्त्रित करैत अछि।

एहि अध्ययनमे 'कन्यादान' आ 'पारो' सँ तुलनाक प्रवेश-बिन्दु विवाह-संस्था आ स्त्री-पीडा अछि। एहि तुलना केवल विषयक समानता तक सीमित नहि रहबाक चाही। पात्रक अन्तःस्वर, नाटकीय संकोच, आत्मकथा बनाम तृतीयपुरुषक कथन आ अन्तिम निर्णयक संरचना मिलब आवश्यक अछि। आलोचक तुलनाक दिशा प्रस्तावित करैत छथि; फेर अलग-अलग कृतिक संपूर्ण संरचनात्मक तुलना स्वयं एहि अध्यायक सीमान्तपर रहि जाइत अछि।

‘सुजाता’क बगलमे ‘सुकन्या’ पढ़िते ई मूल प्रश्न प्रकट होइत अछि : स्त्रीक स्वतंत्रता केवल समाजक गलत नियम हटा देबाक नाम नहि, अपन इच्छाक अर्थ कहबाक आ बदलबाक अवकाश अछि। आलोचनाक ई उपलब्धि उल्लेखनीय अछि। मुदा स्वतंत्र इच्छाक भीतर आर्थिक, पारिवारिक आ शैक्षणिक संसाधनक अनुपातक विस्तृत विवेचन होइत तँ सुधारवाद पर ओकर आपत्ति आरो कठोर बनैत।

७. 'परिवार' : स्मृति आ समाजक बीच अपनत्व

मूल आलोचना : पृ. १३३-१५२

'परिवार'क अध्ययन स्मृति, संयुक्त परिवारक विघटन आ पुनर्निर्माणकें निजी करुणाक कथा मात्र नहि मानैत। नरेन्द्रक जीवनयात्रा, शंकर-दीपालीक सम्बन्ध, शिक्षा, गाम-घुरान, भाईसभक सम्बन्ध आ सांस्कृतिक आयोजन घरक सीमा बढ़बैत अछि। आलोचक देखबैत छथि जे 'परिवार' रक्तसम्बन्ध मात्र नहि, सामाजिक परस्परताक भाषा सेहो अछि। एहि प्रतिपादनक फल ई अछि जे पारिवारिक नायकक आदर्शवाद सार्वजनिक संस्थाक सुधारक संग जुड़ैत अछि।

पाठक औपचारिक संरचना सरल समयरेखा नहि अछि। स्मृति अतीतकें वर्तमानक आवश्यकतासँ पुनः पढ़ैत अछि। आलोचना एहि समयगत आवागमन पर ध्यान दैत अछि, यद्यपि घटनाक समग्र अनुक्रम फेरसँ कहैत समय कखनो स्मृतिक अस्थिर दृष्टिबिन्दु दबि जाइत अछि। संस्मरणात्मक स्वरक अर्थ केवल पुरान घटना याद करब नहि; आजुक पात्र अपन अतीतकें कोन नैतिक परिणामक लेल चुनैत अछि, से सेहो अछि। एहि चयनक सामाजिक महत्त्व पर आरो सूक्ष्म आलोचना सम्भव छल।

परिशिष्टमे वंशावलीक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण पाठेतिहासिक प्रश्न बनबैत अछि। आलोचक वंशसूचीकें रचनाक सांस्कृतिक दस्तावेजक रूपमे देखैत छथि, मुदा ओकरा स्वतः प्रमाणित पारिवारिक इतिहास मानबाक विरुद्ध सावधान सेहो करैत छथि। साहित्यिक कथा, लेखकक आत्मस्मृति आ दस्तावेजक दावाक बीच अन्तर साहित्य-सम्पादनक बुनियादी अनुशासन अछि। एहि सावधानीक बिना पारिवारिक उपन्यास जाँचलेखनक स्रोत बनि सकैत अछि।

एतय स्त्री-पात्रक भूमिकाक परीक्षण सेहो जरूरी अछि। संयुक्त परिवारक एकता जखन आदर्श बनैत अछि, तखन ओकर रखरखावमे स्त्रीक श्रम, समझौता आ व्यक्तिगत इच्छाक स्थिति की अछि? आलोचना एहि लैंगिक प्रश्नक उल्लेख करैत अछि। मुदा 'परिवार'क नूतन संगठनकें के सशक्त करैत अछि, के त्याग करैत अछि, आ के निर्णयक अन्तिम अधिकार रखैत अछि—एहि सूक्ष्म प्रश्नसभक अधिक उदाहरण विश्लेषणकें पैघ बनबैत।

‘परिवार’क अध्याय साहित्य, समाजस्मृति आ क्षेत्रीय अभिलेखक संगमक कारण विशिष्ट अछि। ओकर उपलब्धि एहि जटिल विधागत क्षेत्रकें पहिचानब; सीमा ई जे पाठ-निर्माणक आत्मीयता आ आलोचकक सामाजिक आशा कखनो एक-दोसरमे बहुत निकट आ जाइत अछि। एक सच्चा पारिवारिक आलोचनाकें अपनत्वक गरमी आ ओकर भीतरक असमानता दुनू एकसाथ अनुभव करय पडैत अछि।

८. 'दिल्लीक पार्क' : सार्वजनिक ठामक बोली आ स्मृति

मूल आलोचना : पृ. १५३-१६५

'दिल्लीक पार्क' अध्याय बारह अध्ययनक बीच आलोचनात्मक गतिमे बदलाव आनैत अछि। एतय दीर्घ नायकक विजय नहि, सार्वजनिक उद्यानमे भिन्न व्यक्तिक बातचीत अछि। श्याम बाबू, खुशवंत सिंह, अजय बाबू, खन्ना साहेब, सुधाकरजी, रमणजी, बुधना आ रघुवंश बाबूक अनुभव नौ खण्डमे आवागमन करैत अछि। आलोचक एहि रचनाकें शब्दचित्रक रूपमे पहचानैत छथि : घटनाक चरमोत्कर्षसँ अधिक महत्त्व सामाजिक आवाज, स्मृति आ साझा स्थलकें अछि।

पार्क एतय एक छोट नागरिक सभा बनैत अछि, मुदा ओ पूर्ण लोकतान्त्रिक प्रतिनिधित्व नहि अछि। जे लोक अवकाश निकालि उद्यानमे बातचीत करि सकैत छथि, हुनक वर्ग, वयस, रोजगारक इतिहास आ नागरिक सुविधा एक सामाजिक चयन बनबैत अछि। आलोचना उद्यानकें संवादक मंच मानैत अछि आ नगरक सार्वजनिकताक सीमा सेहो उठबैत अछि। ई रचनाकें सुखद स्मृतिचित्रक बदला शहरी असमानताक पाठ बनबाक अवसर दैत अछि।

पात्रसभक गाम-घुरानक चर्चा एक आदर्श ग्रामक मिथक पर प्रश्न उठबैत अछि। शिक्षा, चिकित्सा, परिवारक नव संरचना आ रोजगारक अवसर गामक स्मृतिसँ अलग यथार्थ अछि। आलोचक गाम आ शहरकें शुद्ध विरोधी ध्रुव नहि मानैत छथि; ओ आवागमन आ असमान पहुँचक सम्बन्ध अछि। एहि स्थानपर आलोचना नन्दक अन्य उपन्यासक ग्राम-नगर द्वन्द्वसँ अन्तर स्पष्ट करैत अछि, कारण एतय संघर्षक तत्काल समाधान नहि, संवादक बहुवचन बचल रहैत अछि।

शब्दचित्रक शिल्पमे बोलिक भिन्नता आवश्यक अछि। आलोचना संवाद आ भाषा पर टिप्पणी करैत अछि, मुदा नौ आवाजक स्वरसाम्य वा अन्तर जँ छोट उद्धरणक साहाय्यसँ क्रमशः देखाओल जाइत तँ बहुभाषी शहरी जीवनक अनुभव अधिक स्पष्ट होइत। रचनाक व्यक्तिसंग्रहक रूपक आ आलोचनाक वर्गीय निरीक्षण, दुनूकें भाषिक साक्ष्यक संग जोड़ब ई अध्यायक स्वाभाविक अगिला उपलब्धि होइत।

एहि अध्यायक बल ई अछि जे गाम-शहरक सवालकेँ एकल नीति-वाक्यक बदला बातचीतक अनिश्चितता बनबैत अछि। 'दिल्लीक पार्क'क मूल्यांकन एही कारण सफल अछि, कारण आलोचक ओकरा लघु-उपन्यासक सामान्य आरोह-अवरोहक कसौटीपर नहि चढ़बैत छथि। विधागत सावधानी एतय शब्दचित्रक कलात्मक स्वाधीनताकेँ बचबैत अछि।

९. 'याचक के नज़ि' : अधिकारक उलटल शब्दकोश

मूल आलोचना : पृ. १६६-१८५

'याचक के नज़ि'क आलोचना एकटा शब्दक सामाजिक जीवनी लिखबाक प्रयास जेकाँ बुझाइत अछि। सड़कपर देखाइत भिखारीकेँ समाज सहजहि 'याचक' कहि दैत अछि; मुदा अनुमति, पद, चुनावी धन, नौकरी, अनुशंसा आ प्रशासनिक कृपापर आश्रित प्रतिष्ठित व्यक्ति अपन याचनाकेँ औपचारिक अधिकारक भाषामे लुकाबि सकैत अछि। एहि उलटबासी पर आलोचक विशेष बल दैत छथि। शीर्षकक प्रश्न केवल विनोद नहि, सामाजिक सम्मानक वितरणक परीक्षण अछि।

सुभान भाय, सुलेमान, लघु व्यवसायी, दीनू, रौनक आ प्रशासनिक व्यक्तिक प्रसंगक सहारे नौ खण्डक पाठ क्रमबद्ध भेल अछि। श्रम करनिहार व्यक्ति दया पर निर्भर नहि रहय चाहैत अछि, मुदा अनुमति-व्यवस्था ओकर श्रमकेँ कोनो अधिकारीक निजी कृपाक रूप दऽ सकैत अछि। एहि स्थितिमे 'अधिकार' आ 'दान'क अन्तर व्यक्ति-नैतिकता सँ पैघ, संस्था-सम्बन्धी प्रश्न बनैत अछि। आलोचनाक मजबूत क्षण ओहि ठाम अछि जतय वर्गीय स्थिति आ भाषिक प्रतिष्ठाक सम्बन्ध देखाओल जाइत अछि।

विधागत निर्धारण एतय साफ अछि। शब्दचित्र, लघु-उपन्यास आ रेखाचित्रक सीमा जाँचल गेल अछि; अन्ततः क्रमविकसित सामाजिक शब्दचित्रक पहिचान अधिक उपयुक्त बताओल गेल अछि। एहि प्रकार आलोचना शीर्षकक वैचारिक आकर्षणमे बहि कृति पर असंगत विधाक लेबल नहि लगबैत। ई गम्भीर सम्पादकीय संयम अछि।

मुदा आलोचना स्वयं स्वीकारैत अछि जे भिक्षावृत्तिक अनेक सामाजिक कारण—रोग, वृद्धावस्था, अशक्तता, सुरक्षा-विहीनता—मूल कृतिक चित्रमे सीमित अछि। 'सभ लोक याचक छथि' सन व्यापक नीतिवाक्य यदि आयक स्रोत, बलपूर्वक निर्भरता आ सामाजिक सुरक्षाक अन्तर मेटा दैत अछि, तखन व्यंग्य असमान पीडाक भेदकेँ अस्पष्ट बनबैत अछि। एतय आलोचकक प्रश्न आवश्यक अछि : सम्मानक समानता आ परिस्थितिक समानता एक बात नहि।

स्त्री-पात्रक सीमित स्वतंत्रता आ सरकारी व्यवस्थाक अपेक्षाकृत एकांगी दृश्य पर अध्यायक आपत्ति तर्कपूर्ण अछि। तथापि एहि सीमासभक प्रभाव ठीक

कतेक खण्डमे, कोन स्वर-चयन द्वारा बनैत अछि, से प्रस्तुत क्रमिक विवेचनसँ पूर्णतः मापल नहि जाइत। एहि कमी सहित 'याचक के नजि'क अध्ययन ग्रन्थक प्रभावशाली अंश अछि, कारण ई साधारण शीर्षक-विमर्शकें सामाजिक भाषाविज्ञान, श्रम आ अधिकारक प्रश्नमे रूपान्तरित करैत अछि।

१०. 'महारानी कैकेयी' : परिचित दोषक विरुद्ध प्रतिपाठ

मूल आलोचना : पृ. १८६-२००

'महारानी कैकेयी'क विवेचन सामाजिक कथा आ शब्दचित्रसँ भिन्न बौद्धिक जोखिम उठबैत अछि। रामायणक एक परिचित स्त्री-पात्रक दोषारोपण पुनः परखबाक प्रयत्नमे लेखक नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' लोकहित, राजनीतिक दूरदर्शिता, स्नेह, वरदान आ वनवासक उद्देश्यक नव अर्थ बनबैत छथि। गजेन्द्र ठाकुर एहि पुनर्पाठकें नैतिक साहस मानैत छथि, मुदा ओकरा प्रमाणित इतिहास घोषित नहि करैत। विचारक स्वतंत्रता आ प्रमाणक मर्यादा एकसाथ रखबाक ई प्रयास अध्यायक मुख्य बल अछि।

आलोचना विशेष सावधानीसँ कल्पनात्मक पूर्ति, पाठ-साक्ष्य आ अन्तिम निष्कर्षक अन्तर पहिचानैत अछि। कोनो परिचित कथामे मौन स्थान रहबाक अर्थ ई नहि जे प्रस्तावित गुप्त मन्त्रणा निश्चित रूपसँ भेल छल। वैकल्पिक नैतिक पाठक औचित्य ओकर द्वारा खोलल प्रश्नसँ सिद्ध होइत अछि; प्रत्येक कल्पनाकें घटना-इतिहासक दर्जा देनासँ नहि। एहि सुस्पष्ट साक्ष्यबोधक कारण ई अध्याय मिथकीय प्रतिपाठक आलोचना लेल महत्त्वपूर्ण उदाहरण बनैत अछि।

कैकेयीकें नकारात्मक विमाताक रूढ़ छविसँ बाहर आनब स्त्री-अभिकर्तृत्वक प्रश्न खोलैत अछि। मुदा यदि हुनका निर्दोष सिद्ध करबाक लेल प्रत्येक कठिन निर्णयकें लोकहितकारी त्याग बताओल जाए, तँ पुरान एकांगी दोषक स्थानपर नव एकांगी महिमा स्थापित भऽ सकैत अछि। आलोचना एहि खतरा पर प्रश्न उठबैत अछि। स्त्रीक agency, अथवा निर्णयक स्वातन्त्र्य, ओकर प्रत्येक निर्णय नैतिक रूपसँ सही होयबाक समानार्थी नहि अछि। गलती करबाक, परिणाम भुगतबाक आ विरोधी प्रयोजन रखबाक अवकाश सेहो पूर्ण चरित्रक हिस्सा अछि।

अध्याय शास्त्रीय उद्धरण, संस्करण आ पृष्ठ-संकेतक सावधानीक उल्लेख करैत अछि। मिथकीय सामग्री पर लिखैत समय स्रोतक भिन्न पाठपरम्परा स्पष्ट करब आवश्यक अछि; केवल पौराणिक कथाक लोकप्रिय स्मृति साक्ष्य नहि। आलोचकक ई आग्रह पठनीय अछि। तथापि तुलना जतेक विस्तृत स्रोत-

परम्पराक दावा करैत अछि, ततेक पूर्ण मूलपाठ-संयोजन एहि एक अध्ययनमे सम्भव नहि। एहि कारण एकरा अन्तिम निर्णय नहि, अनुसंधान-प्रस्तावक रूपमे पढ़ब अधिक उचित अछि।

‘महारानी कैकेयी’क समीक्षा ग्रन्थक पद्धतिगत उच्चबिन्दु अछि। एतय विषय न केवल एक साहित्यकारक रचना अछि, बल्कि आलोचना स्वयं की दावा करि सकैत अछि—एहि बातक सीमा अछि। प्रतिपाठ अपन शक्ति निश्चित निष्कर्षमे नहि, परिचित निर्णयकें अस्थिर करबाक क्षमतामे पबैत अछि। एहि दृष्टिसँ अध्ययनक संयम ओकर प्रशंसासँ अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि बनैत अछि।

११. 'काव्य सरिता' : लोकधुनक दस्तावेज आ काव्यक शिल्प

मूल आलोचना : पृ. २०१-२२०

'काव्य सरिता'क अध्याय एकहि काव्य-पुस्तकमे वन्दना, नचारी, कजरी, चैती, भजन, पारिवारिक गीत, सामाजिक सुधार, राजनीतिक व्यंग्य आ मैथिली-चेतनाक अनेक प्रवाह पहिचानैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि विविधताकें विषयक असम्बद्ध संग्रह नहि, समाजक अनेक आवाजक सहस्थिति मानैत छथि। एतय नन्दक सार्वजनिक चेतनाक जे विस्तृत मानचित्र बनैत अछि, से पहिल कथासभक सरोकारकें गीतक बाँचल परम्परा संग जोड़ैत अछि।

'चमचा', 'वोट' आ 'घूस'क राजनीतिक आलोचना आ 'माँ', 'देवी गीत' वा 'हमर गाम'क भावभूमि एके रचनात्मक प्रक्रियाक अलग लय अछि। लेखकक सुधारवादी आग्रह कथामे जे प्रत्यक्ष नीतिवचन बनैत छल, गीतमे ओ सामूहिक स्मरण अथवा सार्वजनिक गायनक स्वर बनि सकैत अछि। आलोचना ई परिवर्तन देखबैत अछि। ताहू पर सामाजिक विषय मात्र सँ कविता बनल सिद्ध नहि होइत; छन्द, ध्वनि, आवृत्ति, पदान्त, स्वरचाप आ बिम्बक संग कथ्यक सम्बन्ध आवश्यक अछि।

एहि ठाम मूल आलोचनाक एक महत्त्वपूर्ण सीमा प्रकट होइत अछि। लोकगीतक विधाक नाम देब एक आवश्यक आरम्भ अछि, मुदा वास्तविक लोकधुन आ मुद्रित पदक छन्दात्मक सम्बन्धक विश्लेषण अधिक सघन होयबाक अपेक्षा छैक। नाम 'कजरी' छैक, तँ काव्यक प्रस्तुति निश्चित रूपसँ कजरीक जीवित गायन-विधानक समान अछि—एहन दावा बिना ध्वनि वा छन्द-साक्ष्यक नहि करबाक चाही। आलोचना एहि शोधक आवश्यकताकें स्वीकारि भविष्यक धुन-सूची आ शुद्ध पाठक प्रस्ताव दैत अछि।

बाल-साहित्यसँ आन्तरिक सम्बन्धक चर्चा सेहो विधागत संयमक उदाहरण अछि। 'झूला' वा ऋतु-गीत बालपाठकीय उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा पूरा संग्रह बालगीत नहि। पाठकक आयु, प्रदर्शनक परिवेश आ काव्यक मूल अभिप्राय अलग-अलग परीक्षण माँगैत अछि। एहि भेदक कारण आलोचना लोकसंस्कृतिक संरक्षणक आग्रहकें यांत्रिक बालसाहित्य-श्रेणीकरणसँ बचबैत अछि।

एहि अध्यायक स्थायी योगदान गीतक सामाजिक अभिलेखीय पक्षकें स्थान देब अछि। ओकर सीमित पक्ष श्रव्य सौन्दर्यक प्रत्यक्ष परीक्षणक न्यूनता अछि। काव्यक अध्ययन जखन संग्रह-सूचीसँ स्वरलयक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि, तखन आलोचना अपन असल काव्यशास्त्रीय परीक्षा दैत अछि। 'काव्य सरिता'क पुनर्पाठ ई अपेक्षा साफ कऽ दैत अछि।

१२. 'स्वर्ण-कमल' : नेनाक श्रवणसँ राजकीय न्यायक प्रश्न धरि

मूल आलोचना : पृ. २२१-२४४

'स्वर्ण-कमल'क अध्ययन 'नित नवल'क अन्तिम तथा विधागत रूपैँ सर्वाधिक स्वायत्त अध्याय अछि। बाबीक कथावाचन, प्रफुल्ल आ आन नेनासभक जिज्ञासा, सुजीतक साहसिक यात्रा, नयनावतीक सत्ता, कल्लू राक्षस, विशाखाक साक्ष्य आ राजकीय संघर्षकेँ दस खण्डमे व्यवस्थित कएल गेल अछि। आलोचक एतय प्रौढ सामाजिक उपन्यासक सामान्य कसौटी नहि लगबैत; बालपाठकक अनुभव, कथा-भीतर-कथा आ मौखिक परम्पराक शिल्पकेँ प्राथमिकता दैत छथि।

सर्वाधिक रचनात्मक प्रश्न कथा सुनावयवाली बाबीक स्थानपर अछि। ओ केवल प्रस्तावनात्मक सजावट नहि, बालश्रोताक जिज्ञासा आ कथानकक विराम-गतिक मध्यस्थ छथि। नेनाक प्रश्न कथा पर पाठकक अधिकारक सूचक अछि। एहि दोहरा कथन-विन्यासमे एक दिस राजकुमारक संकटपूर्ण साहसिक संसार अछि, दोसर दिस घरक आत्मीय श्रवणस्थल। आलोचना एहि सहस्थितिक सांस्कृतिक मूल्य स्पष्ट करैत अछि।

राजकुमारक सफलता, जादुई संरक्षण आ पुनर्स्थापित राजसत्ता पर आलोचनात्मक प्रश्न उठाओल गेल अछि। नायक अत्यधिक आदर्श बनि जाइत छथि कि नहि? जादुई सहायता मानवीय प्रयासक जटिलता कम करैत अछि कि नहि? सार्वजनिक न्याय केवल वंशक पुनरुद्धारसँ पूरा होइत अछि कि नहि? एहन प्रश्न बालसाहित्यक मूल्यांकनकेँ नीतिवचनक सरलता सँ बचबैत अछि। बालकक कल्पना केँ सम्मान देबाक अर्थ ओकर पाठक पर प्रश्न पूछबाक अधिकार नहि छीनब अछि।

ज्वादिमीर प्रॉपक प्रकार्य-सिद्धान्तक संकेत एहि अध्यायमे आलोचनात्मक रूपरेखाक एक अलग विस्तार अछि। लोककथाक प्रस्थान, संकट, सहायक, परीक्षा आ पुनरागमनक संरचनात्मक साम्य देखब साहसिक आख्यानक मार्ग बुझबामे उपयोगी अछि। मुदा सिद्धान्तक रूपरेखा यांत्रिक रूपैँ हर घटना पर आरोपित होएत तँ स्थानीय कथावाचनक वैशिष्ट्य ओझरा जाएत। मूल विवेचन तुलनात्मक सूत्र दैत अछि; बाबीक स्वर, मैथिली भाषिक लय आ नेनाक भागीदारी ओकरा समृद्ध बना सकैत अछि।

विशाखा, बाबी आ नयनावतीक भूमिकाक अलग परीक्षण लिंगगत नैतिकता पर ध्यान दैत अछि। स्त्री पात्रसभ कथाक अर्थ बनबैत छथि, मुदा साहसिक अभियानक निर्णायक शरीर बहुधा पुरुष नायकक अछि। आलोचना एहि असमानता पर प्रश्न उठबैत अछि। ओतहि बालनायकक नैतिक विकासक प्रसंग केवल दुष्टक दण्ड नहि, सहमति, प्रमाण आ क्षमाक बहस सेहो बनैत अछि। एहि दृष्टिक कारण बाल-उपन्यासकें अपरिपक्व नैतिकता नहि, बालबोधक पूर्ण साहित्य मानल गेल अछि।

अध्यायक सीमा विस्तारक अनुपात अछि। दस खण्डक कथाक्रम, पात्रविधान, प्रतीक, प्रॉपक संरचना, बालमनोविज्ञान आ शैक्षिक उपयोगिता सभ समेटबाक प्रयत्नमे किछु तर्क-रेखासभ संक्षिप्त रहि जाइत अछि। तथापि ई एक सुसंगत अन्तिम अध्याय अछि : पुस्तकक आरम्भमे कथा आ लोकदृष्टान्तक जे सीमारेखा खींचल गेल छल, एतय ओकर सामने एक पूर्ण बाल-आख्यान आ ओकर स्वायत्त सौन्दर्य उपस्थित अछि।

समेकित विवेचन : आलोचना की हासिल करैत अछि?

बारह अध्ययनक एकसंग पाठ सँ स्पष्ट अछि जे नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क साहित्यबारे ग्रन्थक मुख्य प्रतिपादन 'सामाजिक प्रतिबद्धता' अछि; मुदा एहि शब्दकेँ एकरूप विचारधारा बुझब गलत होयत। 'गाम-घर'मे खर्च आ सार्वजनिक प्रतिष्ठाक नैतिक अर्थनीति, 'आडम्बर'मे सदाचार आ आचरणक विरोध, 'गुदड़ीक लाल'मे वर्ग आ देहक सत्ता, 'सुजाता'मे दफ्तरक असमानता, 'याचक के नजि'मे अधिकारक विकृत भाषा आ 'महारानी कैकेयी'मे दोषारोपणक सांस्कृतिक पूर्वग्रह अलग आलोचनात्मक क्षेत्र बनबैत अछि। एकरहि मानवीय आग्रह भिन्न शिल्पमे अलग राजनीतिक-सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

पहिल अन्तर्सम्बन्ध 'गाम-घर' आ 'आडम्बर'क बीच अछि। ग्राम्य अनुभव दुनूक पृष्ठभूमि अछि; पहिल कृतिक बहुविधा सामाजिक शिक्षाक अनेक रूप देखबैत अछि, दोसर संग्रह सार्वजनिक प्रतिष्ठाक पाखण्डपर अधिक केन्द्रित देखाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि अन्तरकेँ पहचानैत छथि। मुदा प्रकाशित समय, पाठक-वर्ग आ रूपविधानक बदलावक क्रमबद्ध तुलनात्मक अध्ययन होइत तँ नन्दक कथालेखनक विकासक तस्वीर अधिक स्पष्ट होइत। एकर अभाव ग्रन्थक समेकित आलोचनाक सम्भावित अगिला काज अछि।

दोसर सम्बन्ध 'सुजाता', 'सुकन्या' आ 'गुदड़ीक लाल'क बीच अछि। तीनू स्त्री-अनुभवकेँ सामाजिक मान-सम्मानक कसौटी पर लबैत अछि, मुदा प्रताड़नाक तन्त्र अलग अछि। सुगियाक असुरक्षा वर्गीय-सामन्ती व्यवस्था सँ निकट अछि; सुजाताक चुनौती घरेलू रीति सँ कार्यस्थलक संस्थागत हिंसा धरि बढ़ैत अछि; सुकन्याकेँ पुनर्विवाहमे सहमतिक वास्तविक अवकाश चाही। आलोचक स्त्रीक गरिमा केवल विवाह वा मातृत्वसँ नापबाक सीमा उठबैत छथि; एहि कारण ई तीन अध्ययन विचारक एक महत्वपूर्ण संवाद बनबैत अछि।

तेसर सम्बन्ध 'अनठिया कुरुर' आ 'परिवार'क बीच अछि। दुनू रचनामे आदर्शवादी पात्र मानवीय सम्बन्धकेँ बचाबय अथवा नब बनाबय चाहैत छथि। आलोचना सामाजिक सहकारक प्रशंसा करैत अछि, मुदा प्रमुख नायकक सदाशयता पर असाधारण निर्भरता देखैत अछि। घरक पुनर्निर्माण आ ग्राम-नगर सुधारक कथामे व्यक्ति-नैतिकताक महत्त्व अस्वीकार नहि कएल जा

सकैत; तथापि संरचनात्मक अन्यायकें ओ मात्र आंशिक रूपसँ बदलि सकैत अछि। एहि तनावकें अलग-अलग कथा-समापनक तुलना सँ आरो तीक्ष्ण बनाओल जा सकैत।

चारिम सम्बन्ध 'दिल्लीक पार्क' आ 'याचक के नज़ि'क अछि। प्रथम पुस्तकक सार्वजनिक संवादमे भिन्न शहरी अनुभव समान स्थल पर आवैत अछि; दोसरमे समान अधिकारक भाषा वास्तवमे निर्भरता आ प्रतिष्ठाक भेद उजागर करैत अछि। पार्कक बातचीत कह्यवाली सार्वजनिकता आ अनुमति-मँग्यवला दफ्तर—दुनू आधुनिक नागरिकताक अलग दृश्य अछि। आलोचक ओहि अन्तरक सामग्री दैत छथि, जकर आधारपर एक स्वतंत्र अध्ययन नागरिक आवाज, अधिकार आ सार्वजनिक स्थानक राजनीति पर लिखल जा सकैत अछि।

पाँचम सम्बन्ध 'महारानी कैकेयी' आ 'स्वर्ण-कमल'क बीच मिथकीय संरचना अछि। पहिल रचना परिचित आख्यानक स्थापित नैतिक निर्णय उलटबैत अछि; दोसर लोक-आख्यानक स्थापित साहसिक उपकरणसँ नव बालपाठकीय संसार रचैत अछि। एकमे शास्त्रीय प्रमाणक सीमा मुख्य प्रश्न अछि, दोसरमे कल्पनाक स्वतंत्रता आ बालकक सक्रियता। एहि भेदकें मानब साहित्यिक विवेक अछि। कल्पना साहित्य मे वैध होइत अछि; मुदा ओ इतिहासक साक्ष्य स्वतः नहि बनैत। गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनामे ई अनुशासन बारम्बार उपलब्धि बनैत अछि।

छठम सम्बन्ध 'काव्य सरिता' आ 'स्वर्ण-कमल'क बीच लोकधारा अछि। गीत सामूहिक श्रव्य संस्कृतिक पुनरावृत्तिसँ चलैत अछि; बाबीक कथा मौखिक स्मृतिक अगिला पीढ़ीकें हस्तान्तरणसँ। मिथिला आ मैथिली केवल विषय नहि, कथा कहल जाएबाक तथा गीत गाओल जाएबाक माध्यम अछि। एहि रूपमे भाषा सांस्कृतिक सम्पत्ति बनैत अछि। आलोचनाक अगिला काज एहि ध्वन्यात्मक स्तरक अधिक प्रत्यक्ष अध्ययन होयत, विशेषतः जखन छन्द आ बोलिक प्रश्न उठैत अछि।

एक समग्र आलोचनात्मक आपत्ति एहि ग्रन्थक पुनरावर्ती रूप-रेखा पर अछि। अनेक अध्यायमे क्रमागत पाठ, सामाजिक सरोकार, स्त्री-पक्ष, बालसाहित्यक तुलना, सीमा आ निष्कर्ष समान खाँचामे लौटैत अछि।

व्यवस्थित अनुसन्धान लेल ई उपयोगी अछि, मुदा हर विधापर समरूप क्रम लागू केलासँ कृतिसभक आन्तरिक विशिष्टता कखनो मंद पड़ैत अछि। शब्दचित्रक श्रव्य बहुवचन, मिथकीय निबन्धक तार्किक कल्पना, काव्यक छन्द आ बाल-उपन्यासक श्रोता-केंद्रित कथा-विधान अलग पठन-यन्त्र माँगैत अछि। पुस्तक जखन ई बात स्वीकारि अपन विश्लेषण बदलैत अछि, तखन सर्वाधिक प्रभावी होइत अछि।

दोसर आपत्ति स्रोतक स्तरक भेद पर अछि। ग्रन्थ प्राथमिक कृतिक मुद्रित पृष्ठ, प्रकाशकीय निवेदन, साहित्यिक अभिलेख, पुरस्कार-सूची आ आधुनिक विचार-पद्धतिक उपयोग करैत अछि। ई सभ स्रोत एके प्रकारक साक्ष्य नहि। पुरस्कार-सूची विधागत संस्थागत स्वीकृतिक प्रमाण भऽ सकैत अछि; ओ कोनो विशिष्ट कविताक लय वा चरित्रक जटिलताक प्रमाण नहि। कृतिपाठ दृश्य-संरचनाक प्रमाण अछि; ओ स्वतः सामाजिक इतिहासक समग्र सत्य नहि। मूल आलोचना अनेक ठाम ई भेद स्वीकारैत अछि, मुदा स्रोत-पद्धतिक एक समेकित स्पष्ट तालिका अथवा वक्तव्य ओकर विश्वसनीयता आरो बढ़ा सकैत छल।

तेसर प्रश्न आलोचनाक भाषा पर अछि। गजेन्द्र ठाकुरक गद्य अपेक्षाकृत स्पष्ट, वर्गीकृत आ बहसयोग्य अछि। ई गुण अनुसन्धान आ अध्यापन दुनू लेल उपयोगी अछि। मुदा सामाजिक-नैतिक विषयक आवृत्त पद—‘आदर्शवाद’, ‘संरचनात्मक असमानता’, ‘स्त्री-अस्मिता’, ‘नैतिक निर्णय’, ‘बालसाहित्यक विधागत भेद’—यदि विशिष्ट कथा-स्थिति सँ न जुड़य, तँ व्याख्याक लोच घटैत अछि। आलोचनाक समर्थ क्षण ओहि ठाम अछि जतय शब्द परिचित नाम नहि, पाठक विशेष परिवर्तनकें समझेबाक उपकरण बनैत अछि।

एहि सीमा संग पुस्तकक उल्लेखनीय महत्त्व अछि। ई नन्दक बारह कृतिक एक ठाम पठनीय आलोचनात्मक मानचित्र दैत अछि; बहुत कृतिमे क्रम, पात्र, मूल प्रसंग आ प्रमाणक सावधानी राखैत अछि; सामाजिक मूल्यपर प्रश्न करबाक संग उपदेशात्मक साहित्यक कलात्मक जोखिम सोझाँ आनैत अछि; तथा बालसाहित्यक स्वतंत्र विधागत अस्तित्व बचबैत अछि। एकहि लेखकक अनेक रूपकें एकसाथ जाँचबाक ई प्रयास मैथिली आलोचनामे विस्तृत संवादक आधार बनि सकैत अछि।

पाँच उल्लेखनीय आलोचनात्मक उपलब्धि : एक चयन

एहि चयनक अर्थ नन्द कुमार मिश्रक श्रेष्ठ पाँच मूल रचना घोषित करब नहि। एतय उपलब्ध ग्रन्थक ओ पाँच अध्ययन चिह्नित अछि जाहिमे आलोचकक विशिष्ट हस्तक्षेप, पद्धतिगत विवेक, अन्तर्विरोधक पहिचान आ पुनर्पाठक क्षमता विशेष स्पष्ट रूपसँ प्रकट होइत अछि। सूची मूल्य-निर्णयक प्रस्ताव अछि; निश्चित साहित्यिक श्रेणीक्रम नहि।

१. 'गुदड़ीक लाल' : सुगियाक सहमति पर केन्द्रित प्रश्न

वर्गीय दमनक कथा मे स्त्रीक निर्णय स्वतंत्र छल कि बाध्य—एहि प्रश्नकेँ स्पष्ट कऽ दैत आलोचना नैतिक सुधारवादक सामान्य भाषा सँ अलग स्तर पर पहुँचैत अछि। बाइस परिच्छेदक आधार, शिक्षा-न्यायक सम्बन्ध आ व्यक्तिगत पुनर्स्थापनाक सीमाक स्वीकार ई अध्ययनकेँ मजबूत बनबैत अछि।

२. 'महारानी कैकेयी' : प्रतिपाठ आ प्रमाणक भेद

प्रचलित दोष-छवि पर प्रश्न उठाएबक संग वैकल्पिक कल्पनाकेँ स्थापित इतिहासक प्रमाण नहि मानब एहि अध्यायक विशेष शक्ति अछि। निन्दित पात्रक पक्षमे लिखनाइ आ आलोचनात्मक साक्ष्य-संयम एकसाथ सम्भव अछि—ई अध्ययन एही बातक उदाहरण अछि।

३. 'याचक के नजि' : शब्दक भीतर संस्थागत सत्ता

दृश्य भिक्षुक आ अदृश्य कृपा-याचकक तुलना केवल नैतिक उलटबासी नहि रहैत; ओ श्रम, अनुमति आ अधिकारक तर्क खोलैत अछि। साहित्यिक शीर्षकक अर्थ सामाजिक प्रतिष्ठाक भाषा सँ जोड़बाक क्षमता एतय उल्लेखनीय अछि।

४. 'स्वर्ण-कमल' : बाल-आख्यानक स्वायत्त सौन्दर्य

बाबीक कथावाचन, बालश्रोताक सक्रिय जिज्ञासा, लोककथात्मक प्रकार्य आ राजकीय न्यायक प्रश्नकेँ अलग कसौटी पर जाँचब एहि अध्ययनक विशिष्ट योगदान अछि। बाल-साहित्यकेँ प्रौढ़ साहित्यक छोट रूप नहि मानबाक आलोचनात्मक संस्कार एहि ठाम दृढ़ अछि।

५. 'दिल्लीक पार्क' : शब्दचित्रक विधागत आदर

उद्यानक बातचीतकेँ उपन्यासक चरमोत्कर्षक कसौटीपर नहि रखि सामाजिक आवाज, प्रवासन आ सार्वजनिक स्थलकेँ केन्द्र मानब एक सूक्ष्म विधागत निर्णय अछि। अनेक अनुभवक असम्पूर्ण संवादकेँ साहित्यिक रूपक रूपमे चिन्हबाक कारण ई अध्ययन अलग ठाढ़ होइत अछि।

उपसंहार : नब सवाल बाँचल रहय

‘नित नवल’क पाठ गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक प्रयासक व्यापकता सोझाँ अनैत अछि। एक लेखकक बारह भिन्न कृतिक सहारे जाति, वर्ग, स्त्रीक स्वातन्त्र्य, शिक्षाक अवसर, सामाजिक दान, प्रशासनिक अन्याय, पारिवारिक पुनर्संयोजन, मिथकीय निर्णय, लोकधुन आ बालकक कल्पना एकहि आलोचनात्मक परिसरमे आबैत अछि। ई विविधता पुस्तकक पहिल वास्तविक सम्पदा अछि।

एकर दोसर सम्पदा आलोचनाक आत्मसीमा मानबाक प्रयत्न अछि। मूल कृति प्रशंसनीय उद्देश्य रखितहुँ कलात्मक रूपसँ असमान भऽ सकैत अछि; बालोपयोगी प्रसंग रहितहुँ पुस्तक स्वतः बालसाहित्य नहि बनैत; कल्पनात्मक प्रतिपाठ नैतिक रूपसँ उपयोगी भऽ सकैत अछि मुदा ऐतिहासिक निश्चितता नहि। एहि तीन भेदकेँ निरन्तर बचाबय चाहब आलोचनाकेँ प्रचारसँ अलग करैत अछि।

तथापि साहित्यक विस्तृत समीक्षा लेल केवल रचनाक विषय आ नैतिक संदेश पर्याप्त नहि। कहनाइ, सुननाइ, रूपक, गति, वाक्यक अनुगूँज, पात्रक मौन, दृश्य-निर्माण आ पाठकक अनिश्चितता—ई सभ कलात्मक प्रमाणक क्षेत्र अछि। मूल ग्रन्थ एहि दिशामे जे कदम बढ़बैत अछि, तकरा अधिक विशिष्ट पाठ-साक्ष्य, कम आवृत्ति आ तुलनात्मक अध्ययनक कसाव सँ आरो पुस्ता कएल जा सकैत अछि। ई आपत्ति अध्ययनक मूल्य घटेबाक लेल नहि, ओकर आलोचनात्मक सम्भावना स्पष्ट करबाक लेल अछि।

ई सम्पादकीय पुनर्पाठ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल’ नन्द कुमार मिश्र ‘नन्द’क साहित्यक समग्र निर्णायक न्यायादेश नहि, ओकरा समझबाक एक विस्तृत, परीक्षणयोग्य मानचित्र अछि। मानचित्रक उपयोग ओतहि सर्वाधिक अछि जतय ओ नब प्रश्नक राह खोलैत अछि। लेखकक मानवीय आग्रह आ ओकर कलात्मक रूपक बीच जतेक अन्तर अछि, मैथिली आलोचनाक जिज्ञासा ओहि अन्तरमे जियेबाक चाही।

पाठाधार आ सम्पादकीय मर्यादा

प्राथमिक अध्ययनाधार : गजेन्द्र ठाकुर, 'नित नवल : नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क बारह कृतिक समग्र आलोचनात्मक अध्ययन', विदेह, २०२६; समीक्षाक आधार बनल ६ × ९ इञ्च DOCX प्रति, लगभग २४८ पृष्ठ। मूल पुस्तकमे बारह अध्ययन चारि खण्डमे विन्यस्त अछि। एहि सम्पादकीय सामग्रीक कथानक-संकेत, शीर्षक, अध्याय-क्रम आ विवेचनात्मक दावाक आधार उपर्युक्त अध्ययन-ग्रन्थ अछि।

मूल बारह रचनाक स्वतंत्र डिजिटल/मुद्रित प्रतिलिपि एहि कार्य लेल अलगसँ उपलब्ध नहि कराओल गेल अछि। अतः एहि खण्डमे मूल कृतिसभक प्रत्यक्ष पाठ-समीक्षा होयबाक दावा नहि कएल गेल अछि। जतेक ठाम नन्दक रचनाक पात्र, दृश्य वा कथानकक चर्चा अछि, ओ गजेन्द्र ठाकुरक प्रकाशित आलोचनात्मक पाठक माध्यमसँ पढ़ल गेल सामग्री अछि। एहि भेदकें उद्धरण, निष्कर्ष आ साहित्येतिहासिक दावासभ पर लागू बुझल जाय।

मूल ग्रन्थमे जिन तुलनात्मक लेखक, सिद्धान्तकार, पुरस्कार-सूची वा अभिलेखक उल्लेख अछि, हुनका स्वतंत्र रूपसँ सत्यापित कएबाक दावा एहि पुनर्पाठमे नहि कएल गेल अछि। एहि सामग्रीमे विस्तृत मूल उद्धरणक पुनर्मुद्रण नहि, मुख्यतः विवेचनक आलोचनात्मक परिभाषा आ पुनर्व्याख्या राखल गेल अछि। प्रमाणक अभावमे अनुमानकें स्थापित तथ्यक रूपमे नहि राखबाक एहि मर्यादाकें सम्पादकीय अध्ययनक आवश्यक अनुशासन मानल गेल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७३

एहि खण्डमे नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क बारह कृतिपर गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कएल गेल आलोचनात्मक अध्ययनक स्वतन्त्र पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि। कथा, उपन्यास, शब्दचित्र, कविता आ बाल-आख्यानक माध्यमसँ समाज, स्त्री-अस्मिता, लोकचेतना, मिथकीय पुनर्विचार आ शिल्पगत प्रश्नक विश्लेषण अछि। आलोचनाक तर्क, प्रमाण आ साहित्यिक मूल्याङ्कनक सीमा सेहो एहि सम्पादकीयक विषय अछि।

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह